

नए कानून लागू

देश में बहुप्रतीक्षित तीनों नए कानून लागू हो गए। सरकार ने दावा किया है कि इन कानूनों के चलन में आने से न्याय सुनिश्चित होगा। बता दें कि पुराने कानूनों का बल ढंड पर अधिक था। नए कानूनों में आधुनिक प्रणाली स्थापित करने का प्रावधान है। इसके तहत अब घर बैठे एकआईआर दर्ज कराने, शन्य प्रथमिकों के तहत किसी भी थाने में शिकायत दर्ज कराने जैसी सहायताएँ दी गई हैं। जाहिर है इससे जहां लोगों का समय बचेगा वहां त्वरित कार्रवाई भी की जा सकेगी। एकआईआर दर्ज होने के बाद अदालतों को भी तय समय के भीतर फैसला सुनाने की बाध्यता होगी। बलात्कार, बाल यौन शोषण जैसे मामलों में जांच और सुनवाई संबंधी सख्त नियम बनाए गए हैं। इससे जहां लोगों में कानून का भय होगा वहीं मामलों की जांच और सुनवाई में गति आएगी। जाहिर है इससे लोगों को न्याय मिल सकेगा। लेकिन विपक्ष तोहमत मढ़ रहा है कि इन कानूनों में कुछ ऐसी सख्त धाराएँ बनाई गई हैं, जिनसे पुलिस को मनमानी का अधिकार मिलता। यहीं नहीं इससे मानवाधिकारों का हनन भी होगा। खासकर आपराधिक कानूनों को लेकर व्यापक विरोध देखा जा रहा है। आरोप है कि ये कानून विपक्ष की गैरमौजूदी में और बिना किसी बहस के पारित किए गए थे, इसलिए इन पर विशद चर्चा नहीं हो पाई थी। इसलिए कई धाराओं को लेकर भ्रम और विवाद की स्थिति बनी रहुई है। सामाजिक बदलावों और जरूरतों के मुताबिक कानूनों में संशोधन और अप्रासंगिक हो चुके कानूनों को समाप्त करना जरूरी होता है। इस लिहाज से औपनिवेशिक काल से चले आ रहे कानूनों की समीक्षा और उनमें बदलाव जरूरी थे। हालांकि ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि सारे कानून ब्रिटिश राज के समय से जस के तस चले आ रहे थे। उनमें समय-समय पर बदलाव और संशोधन होते रहे हैं। जिन कानूनों की प्रासंगिकता नहीं रह गई थी, उन्हें समाप्त भी किया गया। मगर फिर भी बहुत सारे कानून नए जमाने की स्थितियों से मेल नहीं खा रहे थे। पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह अपराधों की प्रकृति बदली और देश की अखंडता और संप्रभुता को चुनौती देने वाली गतिविधियां बढ़ी हैं, आतंकवादी संगठनों की सक्रियता बढ़ी है, उसमें कुछ सख्त कानूनों की जरूरत से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन आपराधिक कानून बनाते समय यह ध्यान रखना भी जरूरी होता है कि किसी महकमे को इतनी शक्ति मिल जाए कि वह उनका दुरुपयोग ही करने लगे। इसके चलते सामान्य नागरिकों के मानवाधिकारों का हनन भी न हो। औपनिवेशिक समय के राजद्रोह कानून की जगह देशद्रोह कानून लाने की इसीलिए सबसे अधिक आलोचना हो रही है कि उससे लोगों में नागरिक अधिकारों के हनन का भय सताने लगा है। हालांकि हर नए कानून के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा तो होती ही है, होनी भी चाहिए, मगर उन पर आम सहमति बने विना लागू किए, जाने से विवाद और नाहक भय का वातावरण बनता रहता है। जब तक आम नागरिकों में इन कानूनों को लेकर भरोसा नहीं बनेगा, विरोध के स्वर उत्तर रहेंगे। जब ये कानून संसद में पारित हुए थे, तब उसके एक हिस्से के विरोध में ट्रक चालकों ने देशव्यापी हड़ताल की थी। अब कई जगह खुद वकील इसके विरोध में उत्तरने वाले हैं। कुछ राज्यों ने विरोध में आवाज उठानी शुरू कर दी है। संसद में विपक्ष तो हमलावर है ही। अगर सचमुच कुछ कानूनों की वजह से समाज में व्यवस्था के बजाय अव्यवस्था पैदा होती है, तो यह किसी भी तरह लोकतंत्र के लिए अच्छी बात नहीं होगी। सरकार को यह भरोसा दिलाना होगा कि ये कानून वास्तव में लोगों के लोकतांत्रिक और मानवीय अधिकारों की रक्षा करने वाले हैं, न कि डराने वाले।

असंतुलित जीवन स्वतरनाक

डा. वारन्द्र भाटो मगल

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं एवं आदर्शों में संतुलन बनाए रखने की योग्यता है। इसका अर्थ जीवन की वास्तविकताओं का सामना करने तथा उनको स्वीकार करने की योग्यता है। इस दौर में अधिकांश व्यक्ति मानसिक अशांति के साथ धबराहट, डर, असुरक्षा व बैचेनी आदि का अनुभव करता है और अगर यह दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल हो जाता है तो वो व्यक्ति मानसिक अस्वस्थता की स्थिति में चल रहा होता है। इसके पीछे कारण है कि व्यक्ति भौतिक और सामाजिक परिस्थितियों में अपने को सही रूप से समायोजित नहीं कर पाता है, फलस्वरूप मानसिक द्वंद्व बढ़ जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मानसिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रयत्न करते रहना चाहिए।

इस भौतिकवादी युग में मानसिक अस्वस्थता का प्रमुख कारण है—असंतुलित जीवन व्यवहार। जिसमें और अधिक पाने की लालसा ने मानसिक रूप से व्यक्ति को अस्वस्थ बनाया है। पैसा, पद व

पावर की अंधी दौड़ में व्यक्ति स्वयं को भूल सा गया है। बल्कि इनका उपर्योग सही रूप से नहीं कर पाने के कारण व्यक्ति स्वयं को अकेला महसूस करने लगा है। सही मायने में व्यक्ति का यह आंतरिक खालीपन ही मानसिक अस्वस्था है। आज व्यक्ति पैसा कमाने की अंधी दौड़ में परिवार, समाज, रिश्ते, नाते सबको को पीछे छोड़ केवल पैसों के पीछे लगा रहता है, इससे पैसों का संग्रह तो बढ़ जाता है, लेकिन एक समय बाद स्वयं को अकेले पाता है। इसी प्रकार बहुत बड़े-बड़े पदों पर बैठे लोग अपने पद व पावर का दुरुपयोग करते हुए अनीति व अत्याचार पूर्वक दूसरों को परेशान करते हैं, दुर्भावना रखते हैं, योग्य व्यक्तियों को सम्मान नहीं देते हैं, अनैतिक आचरण करते हैं, परिणाम स्वरूप व्यक्ति मानसिक तनाव व अवसाद के साथ मानसिक रोगों का शिकार हो जाता अस्वस्थ हो जाते हैं। परिवार व समाज के साथ अभिन्न जुड़ाव के कारण व्यक्ति में दोष भाव उत्पन्न नहीं होता, परिणाम स्वरूप वे मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। मानसिक रूप से स्वस्थ होने के लिए व्यक्ति में आत्म विश्वास व आत्म सम्मान की भावना का विकास होने के साथ-साथ चिंतन-मंथन व विचार करने का समर्थ्य भी होना चाहिए। इसके अलावा बुद्धि व विवेक के द्वारा निर्णय लेने की क्षमता का विकास व जीवन में धैर्य के साथ उत्साह भी दिखना चाहिए। स्वयं कमियों के प्रति जागरूक रहत हुए शक्ति व योग्यता का आकलन करने की क्षमता भी मानसिक शक्ति प्रदान करता है। इसके अलावा दूसरों के प्रति सम्मान और श्रद्धा के साथ प्रत्येक परिस्थिति में मन में सैवै प्रसन्नता व प्रफुल्लता का अहसास करते रहने से मानसिक स्वास्थ्य को प्रबल बना सकता है।



अशाय, भारतवा

ममता बनर्जी ने एक तीर से दो निशाने साधे

इस बात में कोई दो राय नहीं कि तकरीबन 28 दलों की एकता से खड़े हुए इंडिया अलायंस पर कांग्रेस लगभग कब्जा कर चुकी है। अलायंस के महत्वपूर्ण फैसलों में कांग्रेस का दबदबा रहा है। यहां तक कि हालिया लोकसभा के स्पीकर चुनाव में खुद का कैंडिडेट उत्तरकर पार्टी अपने सहयोगियों ने संदेश दे चुकी है कि उसके फैसले ही इंडिया गठबंधन के फैसले हैं। ऐसा नहीं कि कांग्रेस की 'दादागिरी' का विरोध किसी ने किया नहीं है। नीतीश कुमार इसी पार्टी की गठबंधन को हथियाने वाली भाँति को जिम्मेदार बताकर इंडिया को छोड़ चुके हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी भी गली-भाँति समझ रही है कि गठबंधन लगभग कांग्रेस के कब्जे में जा चुका है। खैर, अब ममता बनर्जी ने एक ऐसा दाव चल दिया है जिससे सिर्फ कांग्रेस की परेशानी नहीं बढ़ेगी बल्कि खुद ममता बनर्जी का पक्ष मजबूत हो जाएगा।

रूपसद में सांसदों का सच्चायाबल बढ़ा है तो विपक्ष

लोकसभा स्पीकर पद से लेकर डिप्टी स्पीकर पद तक कब्जे की कोशिश में लगा है। खैर, लोकसभा स्पीकर का चुनाव संपन्न हो चुका है और भाजपा ने ओम विरला लगातार दूसरी बार इस कुर्सी पर उठे हैं हालांकि डिप्टी स्पीकर का पद खाली है जिसके लिए सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों में मुकाबला भी सकता है। इसी बीच ममता बनर्जी ने डिप्टी स्पीकर पद के लिए एक नाम सुझाया है जिससे ग्रांडेस की उम्मीदों पर पानी फिर सकता है।
ममता बनर्जी ने कैसे एक तीर से दो निशाने साध लिए हैं। इसको ऐसे समझ सकते हैं कि जब लोकसभा स्पीकर का चुनाव हुआ तो कौंग्रेस ने खुद भी अपने सांसद के सुरेश को कैंडिडेट के रूप में उतार दिया लेकिन इस एकतरफा फैसले से ममता बनर्जी खुश नहीं थीं। टीएमसी ने एक बयान में कहा था कि स्पीकर चुनाव में उम्मीदवार उतारने से पहले उससे सलाह नहीं ली गई थी। इसे टीएमसी ने 'एकतरफा' फैसला करार दिया था। यही नहीं, टीएमसी ने एक सुरेश के नामांकन पर साइन भी नहीं किए थे। इस पूरे घटनाक्रम में दिखा था कि ममता बनर्जी अकेले पड़ चुकी हैं क्योंकि किसी और लोग ने के सुरेश को उम्मीदवार बनाए जाने पर आपत्ति नहीं जताई थी। ममता बनर्जी को पीछे हटना चाहा था।

कलहाल डिप्टी स्पीकर पद के लिए संभावित चुनाव ती तैयारी चल रही है। वैसे डिप्टी स्पीकर का पद

विषय को देने की परपरा रही है लेकिन भाजपा बिना चुनाव के ये पद विषय को नहीं देना चाहता है। इस स्थिति में विषय की तरफ से ममता बनजी ने एक नाम का प्रस्ताव रखा दिया है। पुष्टि तो नहीं है, लेकिन सूत्र बताते हैं कि ममता बनजी ने डिप्टी स्पीकर के लिए समाजवादी पार्टी के सांसद अवधेश प्रसाद के नाम का प्रस्ताव केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह को दिया है। सूत्र कहते हैं कि राजनाथ सिंह ने ममता बनजी से फोन पर बात करके डिप्टी स्पीकर के मुद्दे पर चर्चा की थी।

पिछला घटनाक्रम कहता है कि टीएमसी सुप्रीमो के ये दांव बहुत बड़ा है। ममता बनजी ने कहीं ना कहा एक तीर से दो निशाने साध लिए हैं क्योंकि कांग्रेस अपनी प्लानिंग कर रही थी कि वो अपना स्पीकर बनाएंगी। अब अवधेश प्रसाद के नाम का प्रस्ताव बताता है कि विषय में कांग्रेस सबसे बड़ा दल होने के बावजूद टीएमसी सुप्रीमो ममता बनजी चाहती है कि डिप्टी स्पीकर गैर-कांग्रेसी हो। उसके अलावा अवधेश प्रसाद के नाम का प्रस्ताव अखिलेश यादव के लिए बड़ी खुशी जैसा फैसला होगा। इससे जाहिर है कि अखिलेश यादव का झुकाव ममता बनजी का तरफ होगा जाएगा। अगर ऐसा हुआ तो इंडिया गढ़बंधन में ममता बनजी और मजबूत नेता बन जाएंगी।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि ममता बनजी का महत्वाकांक्षा भी प्रधानमंत्री बनने की रही है। कभी बार मीडिया के सहरे टीएमसी के नेताओं ने इंडिया गढ़बंधन में ममता बनजी की दावेदारी को मजबूत किया है। अभी इसकी गुंजाइश बची नहीं है क्योंकि देश की जनता ने इंडिया गढ़बंधन को सत्ता में बैठने का मौका नहीं दिया है। हालिया लोकसभा चुनावों में गैर-एनडीए दल मिलकर भी सरकार नहीं बना पाए हैं। ये जरूर है कि विषय की स्थिति बीमार 10 साल में अब आकर सुधरी है।

एक पक्ष यह भी है कि अवधेश प्रसाद दलील समुदाय से ताल्लुक रखते हैं, जिसके चलते इंडिया गढ़बंधन उनके पीछे खड़े रह सकता है, लेकिन भाजपा के लिए एक कठिन प्रस्ताव है कांग्रेस विषय में सबसे बड़ी पार्टी है, बावजूद इसके ममता बनजी ने लोकसभा डिप्टी स्पीकर के लिए सपा सांसद अवधेश प्रसाद के नाम का प्रस्ताव रखा है। कांग्रेस की तरफ से पहले दलित समुदाय से आने वाले वरिष्ठ सांसद के सुरेश के नाम की चर्चा थी लेकिन ममता ने अवधेश का नाम आगे बढ़ा दिया है अखिलेश यादव की बिना मर्जी से ममता ने यह फैसला नहीं लिया होगा।

यह स्पष्ट है कि सपा और टीएमसी में एक राजनीतिक बनने के बाद ममता ने मास्टर स्ट्रोक चला है।

कांग्रेस वक्त की नजाकत को देखत हुए अब प्रसाद का विरोध नहीं करेगी, क्योंकि अभी उत्तरारण पर भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी हैं। ऐसे गठबंधन राजनीति के दूरगामी हितों को देखते कांग्रेस डिप्टी स्पीकर पद के लिए अवधेश प्रसाद नाम का समर्थन कर सकती है।

लोकसभा डिप्टी स्पीकर चुनाव के मौके संयुक्त उम्मीदवार के तौर पर अवधेश के नाम इंडिया गठबंधन आगे बढ़ाएगा। गठबंधन उनके नाम को आगे कर दलित समुदाय को खास संदेश दें चाहता है। इससे पहले स्पीकर के लिए दलित से आने वाले के सुरेश को विपक्ष ने उम्मीद बनाया था।

बताया जाता है कि उत्तर प्रदेश में दलित वोटों और अधिक एकजुट करने की यह रणनीति खास तौर पर अयोध्या हारने का भाजपा के जीत को भी हरा करने की है। इसीलिए ममता बनर्जी यह चतुराई के साथ उनके नाम को आगे किया। तरह कांग्रेस बनाम भाजपा के बजाय अब विबनाम भाजपा के नैरेटिव बनाने का दांव चला ममता बनर्जी और अखिलेश यादव ने दिल्ली आम आदमी पार्टी के साथ दोस्ताना रवेंया दिखाया है। डिप्टी स्पीकर के लिए गैर-कांग्रेस उम्मीद बनाने से सभी विपक्षी दलों का समर्थन हासिल सकता है। खासकर वो दल जो कांग्रेस के साथ जुनहीं होना चाहते हैं, वो भी इस मुद्दे पर साथ देने सकते हैं। अवधेश प्रसाद के नाम पर इंडिया गठबंधन के घटकदलों के साथ-साथ आम आदमी पार्टी, अकाली दल और निर्दलीय सांसद चंद्रशेखर आजाद जैसे नेताओं का भी समर्थन मिल सकता है। अवधेश प्रसाद के नाम को आगे बढ़ाकर विपक्ष भाजपा को कशमकश में डाल दिया है। टीएस और सपा को लगता है कि फैजाबाद सांसद अवधेश प्रसाद एक अलग तरह के कैंडिडेट होंगे और उन्हें उम्मीदवारी एक मजबूत संदेश देंगी। सूत्रों की वाली तो राहुल गांधी और अखिलेश से बातचीत में ममता के भतीजे अभिषेक बनर्जी ने कहा कि लोकसभा डिप्टी स्पीकर पद के लिए इंडिया गठबंधन उम्मीदवार के चयन से एक 'मजबूत संदेश' दें चाहिए, क्योंकि संसद में संख्या बल के हिसाब से इंडिया गठबंधन कमज़ोर है।

इसलिए प्रतीकात्मकता पर मैसेज देने की कोशिश करनी चाहिए। यूपी की उस पार्टी के नेता का नाम डिप्टी स्पीकर के लिए बढ़ाया है, जो 37 सांसदों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

हालांकि, 1990 से लेकर 2014 तक डिप्टी स्पीकर का पद भी सत्ता पक्ष के पास था। 2019 से 2024 तक डिप्टी स्पीकर का पद खाली था लेकिन 2024

में मोदी सरकार ने डिप्टी स्पीकर का पद विपक्ष का देने के बजाय एनडीए में अपने सहयोगी एआईडीएमके को दिया था। माना जा रहा है कि इस बार भाजपा डिप्टी स्पीकर का पद एनडीए के सहयोगी टीडीपी को दे सकती है। ऐसे में ममता ने अवधेश प्रसाद का नाम चलाकर भाजपा को कशमकश में डाल दिया है।

मोदी सरकार भले ही अभी तक उपसभापति पद के लिए किसी उम्मीदवार पर सहमति नहीं बना पाई हो लेकिन विपक्ष की ओर से इस पद के लिए उम्मीदवार पर आम सहमति बनाना स्वाभाविक है। स्पीकर के लिए के। सुरेश भले ही चुनाव हार गए लेकिन विपक्ष को लगता है कि वह अपनी बात को रेखांकित करने में सक्षम था कि मोदी सरकार को और अधिक उदार होने की आवश्यकता है।

खासकर हात के चुनावों में भाजपा को अपने दम पर बहुमत नहीं मिल सका। इसीलिए केंद्र में बनी मोदी सरकार भाजपा की नहीं बल्कि एनडीए की सरकार है। विपक्ष के नैरेटिव कि भाजपा संविधान बदल सकती है और दलितों के आरक्षण अधिकारों को छीन सकती है, ऐसे में भाजपा के लिए अवधेश प्रसाद की उम्मीदवारी का विरोध करना मुश्किल नजर आ रहा है।

अवधेश प्रसाद का डिप्टी स्पीकर के लिए विरोध करके भाजपा खुद दलित विरोधी कठघरे में खड़ी नहीं होना चाहेगी। अवधेश प्रसाद दलितों की पासी जाति से आते हैं, जो अनुसूचित जातियों में जाटवों के बाद दूसरा सबसे बड़ा समूह है और जो यूपी की आबादी 3 फीसदी है। इस बार पासी जाति से आठ सांसद यूपी से जीतकर आए हैं।

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के कुछ महीने बाद लोकसभा चुनाव में भाजपा का फैजाबाद सीट हार जाना सियासी तौर पर बड़ा झटका था। अवधेश प्रसाद के जरिए विपक्ष भाजपा को उलझन में डाल देना चाहता है। प्रधानमंत्री मोदी को छाड़कर यूपी से कोई भी नेता संवैधानिक पद पर नहीं है। राष्ट्रपति ओडिशा से आती हैं और उपराष्ट्रपति, लोकसभा के स्पीकर दोनों ही राजस्थान से आते हैं। राज्यसभा में उपसभापति बिहार से आते हैं। ऐसे में देश में सबसे ज्यादा सीटें देने वाले यूपी से लोकसभा में डिप्टी स्पीकर बनाने की स्ट्रैटेजी विपक्ष ने बनायी है।

भाजपा अगर अवधेश प्रसाद का विरोध करती है तो विपक्ष यह संदेश देने की कोशिश करेगी कि अयोध्या से जीते हुए सांसद को डिप्टी स्पीकर के लिए स्वीकार नहीं कर रही है। विपक्ष इसे लगातार सियासी मुद्दा बनाए हुए हैं जिस से पिछले दस सालों से मिल रहा दलित वोट इस बार चुनाव में सपा-कांग्रेस में शिफ्ट हुआ है।

भाजपा के लिए भाजपा ही सबसे बड़ा खतरा

जेश कुमार पासी प्रधानमंत्री मादा न
अपने दस साल के
कार्यकाल में ऐसे काम किए हैं कि उन्हें बिना
गंभीर जनता का भगवान् समर्थन मिलना चाहिए

यह नहा ह । वास्तव म सफ मादा नाम प
चुनाव जीतने की कोशिश भाजपा को भारी पड़ है । भाजपा की गलतियों को देखते हुए कर जा सकता है कि मोदी लांट अप कमज़ोर प

यह अच्छा बात ह लाकन जमान पर इन योजनाओं से संगठन का न जुड़ा होना पार्टी को नुकसान पहुंचा रहा है। जब पार्टी वो मांगती है तो वो कार्यकर्त्ताओं को जनता

बाढ़ से प्रति वर्ष लाखों लोग बेघर, बेसहारा

संजीव ठाकुर

हर

वर्ष संदेश को सुना तब से हमारे
ताजे ताजे ताजे ताजे औ

जान जाऊ या नरू लगवान जाना वाहु^१। लेकिन इसके विपरीत भाजपा को पूर्ण अहमत भी हासिल नहीं हो सका है। इस बार मोदी जी ने जबरदस्त चुनाव प्रचार किया लेकिन कई प्रदेशों में भाजपा के अच्छा प्रदर्शन का करने के कारण भाजपा 240 सीटों पर संस्थान गई। भाजपा में अपने प्रदर्शन को लेकर नवबरदस्त मंथन चल रहा है। इस मंथन से भाजपा अपनी हार की सही वजह तक पहुंच कर क्या करेगी, ये देखने वाली बात होगी। ये गरी नजर में भाजपा की दो कमज़ोरियों ने उसे उसके लक्ष्य से दूर रोक दिया। पहली कमज़ोरी उसके संगठन का कमज़ोर होना है। दूसरक भाजपा खुद को दुनिया की सबसे बड़ी उन्नीसक पार्टी बोलती हो लेकिन इन चुनावों में कई राज्यों में पार्टी कहीं दिखाई नहीं दे रही है। जितने कार्यकर्ताओं के होने का दावा भाजपा करती है, उसके दस प्रतिशत कार्यकर्ता भी जमीन पर दिखाई नहीं दिए। चुनाव विरिमाओं के बाद टिकटों के बंटवारे को लेकर भाजपा नेताओं की नाराजगी सामने आ रही है। भाजपा दावा करती है कि उसके कार्यकर्ताओं ने संख्या 18 करोड़ है लेकिन इन चुनावों में उसका दावा हवा हवाई साबित हो गया है। दूसरी प्रकार भाजपा सोशल मीडिया के मामले में सबसे बड़ी पार्टी मानी जाती है। मोदी जी का साथ सोशल मीडिया पर जुड़ने वाले लोगों ने संख्या करोड़ों में है। इसके अलावा सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर बड़ी मात्रा में भाजपा ने विज्ञापन दिये और उसकी सोशल मीडिया टीम भी काम कर रही थी लेकिन इन चुनावों में भाजपा सबसे ज्यादा सोशल मीडिया में ही कमज़ोर दिखाई दी। इन चुनावों में कुछ राज्यों में हार के कारण मोदी ब्रांड की चमक बढ़ी होना बताया जा रहा है जबकि सच्चाई

तक अपनी बात पहुंचाने के लिए इस्तेमाल करती है लेकिन जब सरकार काम करती है तो वो सीधे जनता तक पहुंचना चाहती है । देखने में तो यह भी आ रहा है कि भाजपा सरकार की कार्यशैली ऐसी हो गई है कि भाजपा वे विधायक और सांसद भी शक्तिहीन होते जा रहे हैं । पांच साल तक कल्याणिकारी योजनाओं को अफसरों के माध्यम से जनता तक पहुंचाया गया हो तो वोट मांगने के लिए कार्यकर्ताओं को भेजना कहाँ की बुद्धिमानी है । जब भाजपा सरकारें अफसरों से ही सारे काम करवा सकते हैं तो वोट मांगने भी उनको ही भेजना चाहिए लेकिन संविधान के अनुसार यह संभव नहीं है । वास्तव में भाजपा की सरकारें ही संगठन की कमज़ोरी का कारण बनती जा रही हैं । इन चुनावों ने सावित कर दिया है कि सरकार जनता तक सीधे पहुंच कर अपने संगठन के ही कमज़ोर करती हैं । यही कारण है वि अच्छा काम करने के बावजूद यूपी में भाजपा को जबरदस्त हार का सामना करना पड़ा है और आने वाले विधानसभा चुनाव में पार्टी सत्ता से बाहर हो सकती है । भाजपा वे कार्यकर्ताओं में से ज्यादातर राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के कारण उसमें आते हैं लेकिन जब वे ईमानदारी और मेहनत से काम करते हैं और सरकार बनने पर उनकी अनदेखी की जाती हैं तो उनका पार्टी से मोहभंग हो जाता है । इसके बाद वो या तो घर बैठ जाते हैं या पार्टी के खिलाफ चले जाते हैं । भाजपा का कार्यकर्ता कोई वित्तीय लाभ की चाह न भी रखता है लेकिन सरकार बनने पर उसमें अपनी एक भूमिका तो देखता ही है । किसी भी पार्टी का कार्यकर्ता यह चाहता है कि उनकी सरकार बनने पर दस्तके ग्रन्थ में बढ़ोत्तरी हो ।

देलर बनाम पिक्चर



ੴ ਸਤਿਗੁਰ

पहले आने वाली फिल्मों के ट्रेलर के लिए इंटरवल में जल्दी से सिनेमा हाल में अपनी सीट पर बैठ जाते थे। अंग्रेजी फिल्में हों या हिंदी फिल्में, ट्रेलर, जिसे आजकल टीजर कहा जा रहा है, आने वाली कलम देखने लिए उत्सुकता और उमंग भरता था। पिक्चर से ज्यादा ट्रेलर की बात और चर्चा होती थी। आज कल फिल्में खेना कम हो गया सिनेमा हाल में और खोबाइल या लेप टॉप या टीवी पर टीजर नाम ट्रेलर देखकर बस हो जाते हैं।

फिर एक बार पुराना शब्द ट्रेलर चर्चा में था। जब कहा गया पिछले दस साल का जो था वह ट्रेलर था। कहना तो उन्हें टीजर

था लेकिन पुराने दर्शक जो ठहरे। देखि हमने अगर दशाब्दी समय तक उबाऊ औ सताऊ ट्रेलर ही देखा है तो पिक्चर कितन भारी बोझिल और पगलाऊ होगी, इसके अंदाज लगाया जा सकता है।

एक संवाद लेखक, एक संवाद निर्देशक और एक टेलीप्रॉम्पटर के साथ में विविध कोन से फोटो खींचने वाले फोटोग्राफर और इसबसे बढ़कर ड्रेस डिजाइनर सह मेकर मेन। इतना ताम ज्ञाम तो मिनिमम होना है चाहिए तब जाकर हम मुँह खोलते हैं दिल की बात बोलते हैं।

यही नहीं हर एक सप्ताह एक खास शब्द बोलते हैं जिसे हमारे सभी, जैसे सभापति राष्ट्रपति और अन्य, अपनाते हैं पिछले सप्ताह हमारा शब्द था इमरजेंसी या आपातकाल। यह हमारे गड़े मुर्दे उखाड़ कार्यक्रम का भी हिस्सा था। बैसिक्सियों के सहारे होने के बावजूद हम में इन्हीं शब्दों ने

नया उत्साह, उमंग और उत्तेजना भर जात है। ऐसा लगता है किसी ने ज्वालामुखी वे सिरे को खोल दिया है। हमारा प्रति सप्ताह एक शब्द कार्यक्रम में पुराना शब्द ही इस बार दोहरा रहे हैं ट्रेलर बनाम पिक्चर। अर्भ पिक्चर बाकी है मेरे दोस्त की तर्ज पर।

ट्रेलर भले ही दस साल का है लेकिन पिक्चर उतनी लंबी नहीं होगी। पहली बार ऐसा होगा की पिक्चर से लंबी ट्रेलर होगी सारे तमाशे जाडू के पिटारे से बाहर आ चुके हैं। पिटारा खाली है, बस चाशनी धोले अपनी बातों में जिस तरह मदारी औ जाडूगर दर्शकों को बांधकर जाने से रोक रखते हैं, उसी तरह हम भी करते रहे हैं औ करेंगे भी। विपक्ष का इस तरह बढ़ा हुआ रूप भले ही हमें डराए लेकिन हम हनुमान चालीसा की तरह नफरत के गुबार और गड़े मुर्दँ के समाचार उच्चारते हैं और मन में तथाकथित शांति बनाए रखते हैं।

यानी कि मानव को परंतु प्रकृति आजादी से अछूती रही है। अमूमन हमारी जरूरत रोटी, कपड़ा, मकान और जल की थी कि हमको उद्योग धंधे का विकास तीव्र गति से करना पड़ा। मरीनें जितनी बड़ी से बड़ी होती गई आदमी उतना ही बौना होता गया। कृषि में नई नई तकनीक ट्रैक्टर, रसायनिक उर्वरक, कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि बंजर होकर कराहाने लगी। विकास का सही मायने माननीय शक्तियों के साथ ऊर्जा और उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य का सही उपयोग ही होगा। जब से हमने विकास के पथ पर उड़ान भरी है उद्योगों की चिमनी यों को ऊपर उठाया मोबाइल क्रांति का बटन दबाया ई-मेल पर सवार होकर विश्व मानव सभ्यता से जुड़ी जमीन पानी, हरियाली, पक्षी जानवर सब चाहिए केवल अंधाधुन्ध कंक्रीट का विकास या इंटरनेट की रफ्तार नहीं चाहिए। इसके लिए हमें संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग पर अंकुश लगाना होगा। संसाधनों का इस्तेमाल अतिरेक में नहीं होना चाहिए। महात्मा गांधी ने खुद कहा है कि पृथ्वी पर सभी को आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन हैं, किंतु मानव की लालच को पूरा करने का कोई साधन नहीं है। हम प्राकृतिक परियोजना तथा परिस्थितिकी की परियोजनाओं का स्वागत करना होगा सम्मान करना होगा। हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौर, पवन, बायोगैस, ज्वार तरंग लहरों को ऊर्जा का आधार बनाना होगा।



काकभृशुण्ड के बारे में रामचरितमानस के उत्तराणि में लिखा है

काकभृशुण्ड परमज्ञानी राम भक्त थे। लोकिन एक ऋषि के श्राप के कारण अपना पूरा जीवन एक कौआ बनकर बिताना पड़ा था।

कौन थे काकभृशुण्ड?

पौराणिक कथाओं के अनुसार श्री राम की कथा भगवान शिव ने माता पार्वती को सुनाई थी। उस कथा को एक कौवे ने भी सुन लिया थी। उसी कौवे का पुनर्जन्म काकभृशुण्ड के रूप में हुआ था। काक भृशुण्ड को मिछले जन्म में भगवान शिव के मुख से सुनी हुई रामकथा पूरी तरह से याद थी, इसलिए उन्होंने यह कथा अन्य लोगों को भी सुनाई। भगवान शिव के द्वारा सुनाई गई कथा अध्यात्म रामयान के मान से जानी जाती है।

कथा सुनाकर नागपाश से दिलाई गयी

शास्त्रों में काकभृशुण्ड परमज्ञानी और राम भक्त बताया गया है। रामचरितमानस के अनुसार, प्रभु श्री राम और रावण के युद्ध में जब रावण पुरु मेघनांद ने श्री राम और लक्षण को नागपाश से बांध दिया था तब नारद मृणि के कहने पर गरुड़ जी ने श्रीराम को नागपाश के बांध से मुक्ति दिलाई थी।

काकभृशुण्ड ने दूर किया संदेश

श्रीराम के इस तरह नागपाश में बांध जाने से गरुड़ जी को उनके अवतारी होने पर संदेश हो

जवारीनाथ धाम गौरैया शिव मंदिर

जहां रोगियों को मिलती है नई जिंदगी, तांत्रिक सिद्धी का केंद्र



सतना शहर से लगभग 25 किलोमीटर दूर स्थित जवारीनाथ धाम आस्था और चमत्कार का केंद्र बना हुआ है। यह प्राचीन धाम शिव जी की एक प्राचीन मूर्ति के कारण प्रसिद्ध है। जिसके इतिहास का कोई लिखित प्रमाण नहीं है। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह मूर्ति 1000 वर्षों से अधिक पुरानी है। इसकी महिमा आज भी अपरिवर्तित है। जवारीनाथ धाम के शिव मंदिर में हर मनोकामना पूर्ण करने की वायन्ता है जबकि के साथ स्थानीय लोगों ने यहां विशाल मंदिरों का निर्माण कराया है। इस मंदिर के बाल में ही राम जानकी का मंदिर है। जिसका निर्माण हाल ही में जवारीनाथ की महिमा को देखकर किया गया है।

तांत्रिक सिद्धियों का केंद्र

माना जाता है कि इस शिवलिंग और नंदी महाराज की मूर्तियों की स्थापना एक तांत्रिक सिद्धियों के ज्ञान ने की थी। इस धाम की महिमा का प्रमाण हर स्थानीय व्यक्तिअपनी आंखों से देख चुका है। मंदिर प्रांगण के बाहर जवारीनाथ महाराज के पुजारी और कथावाचक अपनी छोटी सी कुटियां में बैठते हैं। यहां वे श्रद्धालुओं को कथा सुनाते हैं। उनके रोग दोष मुक्त करते हैं।

स्थानीय में बैठते हैं।

जवारीनाथ धाम के कारण स्थानीय विकास को भी प्रोत्साहन मिला है। यहां के लोगों का विश्वास है कि धाम की महिमा ने न केवल धार्मिक बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला है। जवारीनाथ धाम में हर दिन सैकड़ों श्रद्धालु अपनी समस्याओं और बीमारियों से निजात पाने की आस में आते हैं। यह प्राचीन शिवलिंग और इसके चमत्कारिक किस्से यहां की आस्था का मुख्य केंद्र बन चुके हैं।

आसाधी और जिज्ञासा

हालांकि इस धाम के चमत्कारिक उपचारों के पीछे वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं। लोकिन स्थानीय लोगों की आस्था इसे जीवन की नई उम्मीद और प्रेरणा का स्रोत बनाती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इन किसियों का सत्यापन चाहे जो भी हो, आस्था की शक्ति ने यहां कई लोगों का नई जिंदगी दी है।

धार्मिक के साथ-साथ ऐतिहासिक स्थल भी है पावागढ़

मातारानी के 51 शक्तिपीठों में से एक



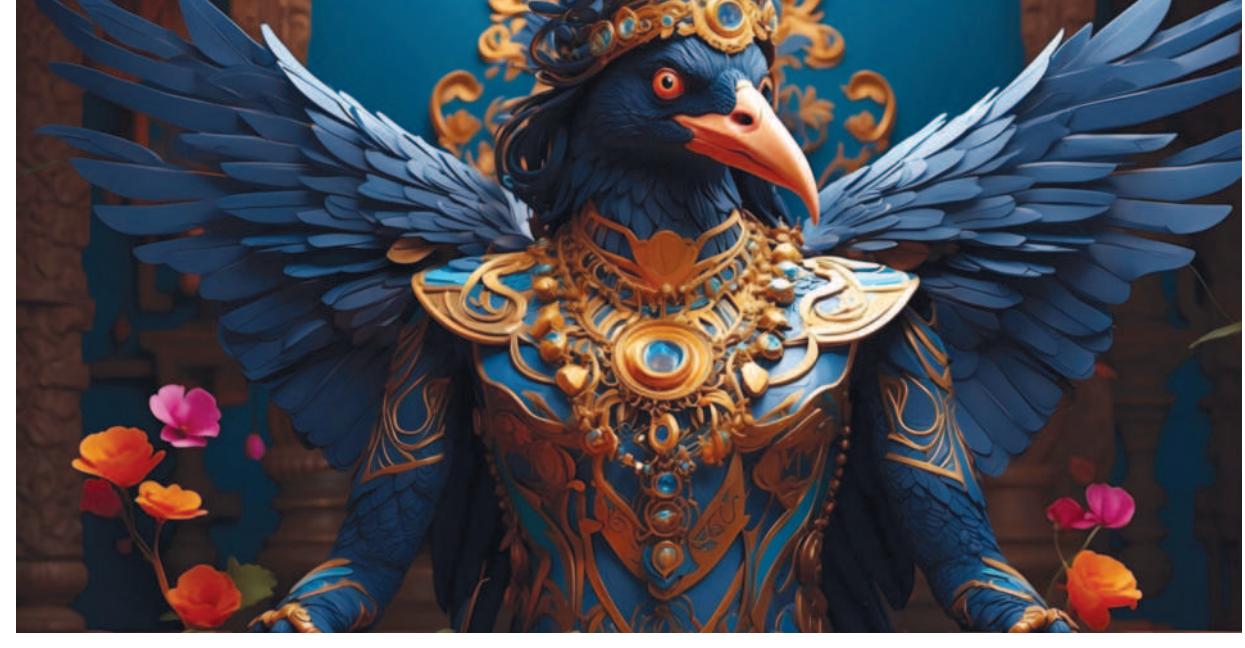
हिन्दू धर्म के यात्राधारों में शक्तिपीठों का विशेष महत्व माना जाता है। युगरात में बड़ोदरा से 55 किमी दूरी पर स्थित पंचदल का प्रसिद्ध यात्राधार पावागढ़ भी भारत के 51 शक्तिपीठ में शामिल है। शक्तिपीठ पावागढ़ मां महाकाली का सबसे बड़ा धाम है। पावागढ़ हिन्दू, मस्लिम, व जैन धर्मों की आस्था का प्रतीक है। यहां इन सभी धर्मों के स्थापत्य व अवशेष पाए जाते हैं। इसीलिए पावागढ़ धार्मिक के साथ साथ ऐतिहासिक स्थान के तीर पर भी काफी महाशर है। पावागढ़ बर्लड हेरिटेज स्थलों को वर्ल्ड हेरिटेज साइट भी घोषित किया गया है। यहां पर जायी मस्जिद, एक मीनार, सात कमान, और कोठार ऐसे स्थापत्य हैं जो वर्ल्ड हेरिटेज में शामिल हैं।

प्रसिद्ध है महाकाली का मंदिर

पावागढ़ मंदिर ऊंची पाली की चोटी पर स्थित है। पावागढ़ हिल की कुल ऊंचाई 2,000 मीटर है। मानसून के समय में यहां ख्वासूरी भी जाती है। यहां मां काली का प्रसिद्ध मंदिर की कीरी 3,500 फीट की ऊंचाई पर बना है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 10वीं और 11वीं शताब्दी के बीच हुआ था। मंदिर के शिखर को लगाने 500 साल पहले सुल्तान महमूद गेडा ने नए कर दिया था, लेकिन नुरविकास योजना के तहत इसे बहाल कर दिया गया है। यहां तक पहुंचने के लिए करीब 2,000 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं या फिर उड़न खटोला की केबल कार का इस्तेमाल किया जा सकता है। शरीर को कहा जाता है, जहां माता सती के शरीर के विच्छेदन करने के बाद उनके अंग गिरे थे। पुराणों के अनुसार पिता दक्ष के ज्यज में अपमानित हुई सती ने योगबल से अपने प्राण त्याग दिए थे। माता सती के मूल्य से व्यथा हुए भगवान महादेव माता सती के मृत शरीर को लेकर तांद्र करते हुए ब्रह्मांड में धूम रहे थे, जिससे तीन लोक में मानो भूचाल मचा रहा। ऐसे में, सम्पूर्ण विश्व को प्रलय से बचाने के लिए जगत के पालनकर्ता भगवान विष्णु ने चक्र से सती के शरीर का विच्छेदन कर दिया। शरीर

काक भृशुण्ड की प्रचलित कथा

इस श्राप के कारण बने कौआ?



सतयुग से पहले भी था एक और युग

भगवान हनुमान ने महाभारत में

भीम से किया था वर्णन
वैसे तो सनातन धर्म में चार युग माने गए हैं। ये युग हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग। लेकिन महाभारत में वैचायनों का वर्णन मिलता है। इन युगों के बारे में भगवान हनुमान ने महाबली भीम को बताया था। इसमें उन्होंने सतयुग से पूर्व के भी एक युग का वर्णन किया है।

कृतयुग

महाभारत के अनुसार सतयुग से भी पहले कृतयुग था। इस युग में लोग अपने कर्तव्य पूरे करते थे, इसीलिए इस युग का नाम कृतयुग पड़ा। कृतयुग में धर्म का हास नहीं होता था और देवता, दानव, गच्छव, वृक्ष, शक्षम और नाग भी नहीं थे। किसी भी क्रिया विक्रिय भी नहीं किया जाता था। किसी भी घंटन नहीं था और स्वार्थ के लिये कोई हास नहीं था।

सतयुग

महाभारत के अनुसार, सतयुग में किसी कोई वीरामी नहीं होती थी और न ही दुख भोगा जाता था। लड़ाई-झगड़ा और राग द्वेष जैसी भी कोई विश्वास नहीं थी।

त्रेतायुग

त्रेता युग में लोग सत्य में तपतर थे और धर्म का पालन करते थे। त्रेतायुग में ही यज्ञ की शुरूआत हुई थी और लोग अपनी भावना और संकल्प के अनुसार करते थे।

द्वापरयुग

महाभारत के अनुसार, द्वापर युग में वेद चार धारों में बंट गए। ऋवृदेव, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इस समय कुछ लोगों को चार वेदों तो कुछ को तीन और दो वेदों का जाना था।

कलियुग

महाभारत में कलयुग को तमोगुणी युग बताया गया है। इसमें क्रोध, आलाच और मानसिक रोगों में वृद्धि होने की बात कही गई है।

गया था। तब उनका संदेह दूर करने के लिए नारद जी ने उनको ब्रह्मा जी के पास भेजा।

ब्रह्मा जी ने उनको महादेव के पास भेज दिया।

महादेव ने गरुड़ के संदेह को दूर करने के लिए उनको काकभृशुण्ड जी के पास भेज दिया।

अंत में काकभृशुण्ड ने श्रीराम का चरित्र गरुड़जी के सुनाकर उनका संदेह दूर किया।

भगवान शिव ने दिया था

गरुड़ में चूर काकभृशुण्ड ने एक बार अपने युग का ही अपमान कर दिया, जिसमें भावान शिव नारज हो गए और श्राप दिया कि तूने अपने युग का अपमान किया है। इसलिए तूने सर्व योनि में जन्म लेने के बाद 1000 बार कई योनियों में जन्म लेना पड़ेगा। लेकिन ब्राह्मण ने भगवान शिव से कोकभृशुण्ड को क्षमा करने का निवेदन किया, लेकिन भगवान शिव ने क्षमा करने का प्राप्ति दिया। अंत में काकभृशुण्ड ने श्रीराम का चरित्र गरुड़जी के सुनाकर उनका संदेह दूर किया।

भगवान शिव ने दिया था

गरुड़ में चूर काकभृशुण्ड ने एक बार अपने युग का ही अपमान कर दिया, जिसमें भावान शिव नारज हो गए और श्राप दिया कि तूने अपने युग का अपमान किया है। इसलिए तूने सर्व योनि में जन

मेरे लिए किरदार का प्रकार मायने रखता है परदे का आकार मेरे लिए मायने नहीं रखता...!

मुंबई की फिल्म नगरी ऐसी है कि यहां शोहरत याने के बाद बड़े बड़े सितारे अपनी जीमीन को भूल जाते हैं। लेकिन, छोटे परदे की सुपरस्टार देवोलीना भट्टाचार्जी अपनी जीवनी, अपनी मिट्टी नहीं भूली है। असम में बनी हिंदी फिल्म 'कूकी' में उनके अभिनय की खूब तारीफ हो रही है। एक छोटी सी मुलाकात में उनसे चार बातें हुईं और उसी दौरान चली चर्चा में वह बोलीं, "मेरे लिए किरदार का प्रकार मायने रखता है। परदे का आकार मेरे लिए मायने नहीं रखता...!"

राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईएफडी) की स्नातक देवोलीना के लिए अभिनय बस एक सपने जैसा ही रहा। गुरुग्राम से पढ़ाई करने वह दिल्ली में फैशन तकनीक सीधे

रही थीं जब उन्हें एक मशहूर जीवरत कंपनी ने अपने यहां नौकरी ऑफर कर दी। मुंबई आई तो वह इसी नौकरी के लिए ही थीं, लेकिन भरतनाट्यम की प्रशिक्षित नर्तकी देवोलीना के 'डॉस इंडिया डांस' 2' के लिए एग एडिशन ने उन्हें दिला धारावाहिक 'सवारे सबके सपने प्रीती'। इसके बाद वह 'बिंग बॉस' में उनकी हैट्रिक बनी। 'साथ निभाना साथिया' की गोपी वह ने उन्हें देश के घर घर तक पहुंचाया और शोहरत का सातवां असमान उन्होंने लगातार नापा।

देवोलीना को हाल ही में बड़े परदे पर फिल्म 'कूकी' में देखा गया। असम में बनी इस हिंदी फिल्म के लिए इसकी निर्माता जुनोनी ने जैसी ही देवोलीना को मदद मारी, असम के

शिवसागर में ही जन्मी देवोलीना तुरंत तैयार हो गई।

इस फिल्म में बलात्कार पीड़ित एक किशोरी के दर्द को अपने समाचार कार्यक्रम के जरिये दुनिया तक एक मुद्दा बनाकर रखने वाली पत्रकार के किरदार में देवोलीना को खूब सराहा। वीते सप्ताहांत देवोलीना के के गर्भवती होने की बातें भी सोशल मीडिया पर खूब होती रहीं। इस बारे में देवोलीना का यही कहना रहा कि ऐसा कुछ होने पर वह छुपने वाली बात तो विकुल ही ही नहीं होगी। छोटे परदे और बड़े परदे के बारे में बात करने पर वह कलाकार के लिए उसका किरदार मजबूत होना ही सबसे ज्यादा मायने रखता है, परदे का आकार-प्रकार मेरे लिए मायने नहीं रखता।"



तमन्ना भाटिया ने 7.84 करोड़ में गिरवी रखे तीन फ्लैट और किराए पर ली 18 लाख की एक प्रॉपर्टी

एक्ट्रेस तमन्ना भाटिया ने मुंबई के अंधेरी वेस्ट में तीन रेसिडेंसियल फ्लैट 7.84 करोड़ रुपये में गिरवी रखे और मुंबई के जुहू में एक कार्यालय प्रॉपर्टी 18 लाख रुपये प्रति महीने के हिसाब से किराए पर लिया है। इसकी जानकारी रियल एस्टेट 'डेयरी एनाइटिक्स' फ्लैट में लगातार के जरिए दी है। कागजी कार्यालय से पता चला कि नानावटी कार्यालयन ने जुहू तारा रोड पर वेस्टने विंड में 6065 एकड़ी की प्रॉपर्टी के रियलेस्टेट के डॉक्यूमेंट्स के जरिए दी है। कागजी कार्यालय से पता चला कि नानावटी कार्यालयन ने जुहू तारा रोड पर वेस्टने विंड में 6065 एकड़ी की प्रॉपर्टी के रियलेस्टेट के जरिए दी है।

तमन्ना भाटिया ने जो प्रॉपर्टी किराए पर ली है, उसका चौथे साल में किराया बढ़कर 20.16



क्या 'मरुधनायगम' पर फिर से काम करेंगे कमल हासन? 1997 में शुरू हुई थी शूटिंग, 85 करोड़ था बजट

कमल हासन की एक फिल्म 'कलिक' 2898 एडी तो पिछले हफ्ते रिलीज हो चुकी है और एक और फिल्म 'इंडियन 2' 12 जुलाई, 2024 को रिलीज के लिए तैयार है। कमल की एक और फिल्म है, जो बहुत लंबे समय से अटकी हुई है। उनके प्रशंसक 'मरुधनायगम' के बारे में जानते ही होंगे। अब कमल हासन ने अपने इस बेहद पुराने प्रोजेक्ट पर बातचीत की है।

कमल हासन ने क्या कुछ कहा उसे जानने से पहले 'मरुधनायगम' के बारे में जान लेते हैं। 'मरुधनायगम' की धोणाया साल 1991 में हुई थी और 1997 में इसकी शूटिंग शुरू हो गई थी। इस फिल्म में कमल हासन अभिनय तो कर ही रहे थे। साथ ही साथ निर्देशन की कमान संभाल रहे थे। हालांकि, बाद में फिल्म बंद हो गई।

एक हालिया साक्षात्कार में कमल हासन से 'मरुधनायगम' को लेकर सवाल पूछे गए। कमल ने कहा कि वो अपने इस प्रोजेक्ट पर



कभी पार्ट टाइम कार डीलर का काम करते थे चंकी पांडे निर्माताओं के दफ्तर के आगे लगानी पड़ती थी लाइन

भूमिका निभाने वाले चंकी ने बताया, मेरे संघर्ष के दिन बहुत अलग थे, तब कोई कास्टिंग डायरेक्टर या डिजिटल मीडिया नहीं था, इसलिए हमें निर्माताओं के कार्यालयों के सामने लंबी रातों में इंतजार करना पड़ता था। उसके मिलना और उन्हें तस्वीरों के साथ एल्म दिखाना, हमें उनके सामने डास भी करना पड़ता था और लोकप्रिय फिल्मों के सान्स्कृतिकों के सामने निभाना पड़ता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार में होता था और निर्माताओं के दफ्तर जाता था।

चंकी ने आगे कहा, यह आसान नहीं था, लेकिन मेरोंदार था। खैर, वे मेरे संघर्ष के दिन थे। मैं पार्ट-टाइम हसलर और टाइम कार डीलर था, इसलिए मुझे उन कारों को चलाने का मौका मिलता था। हर दिन, मैं एक अलग कार



स्वतंत्र वार्ता, हैदराबाद

बुधवार, 3 जुलाई, 2024 9

मानसून में ड्राइविंग करते समय रखें इन बातों का ध्यान



बारिश के कारण गाड़ी के स्लिप होने के चांस और अधिक बढ़ जाते हैं। इस मौसम में गाड़ी चलाने में सबसे ज्यादा कठिनाई भी कम हो जाती है। अगर आप इस मौसम ड्राइविंग करने जा रही हैं तो उससे पहले आपको कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

अनजान रहते से न जाएं
आपको कभी भी मानसून में अनजान रस्ते पर ड्राइव करने से बचना चाहिए। अक्सर लोग शॉटकट लेने के चक्कर में अनजान रस्ते को चुन लेते हैं और फिर उन्हें खराब रोड या फिर गड्ढों का समाना करना पड़ता है। यारी बारिश के कारण ये रस्ते अधिक खराब हो जाते हैं इसलिए बेहतर होगा कि आप मानसून में जल्दी

डिफ़ॉर्ग रुज़ करें

बारिश में पानी से विड़ो धुंधली होती है, साथ ही विजिलिटी भी कम हो जाती है। अगर आप इस मौसम ड्राइविंग करने जा रही हैं तो उससे पहले आपको कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

लाइट्स का युज़ करें
तेज बारिश के दौरान दूर की चीज़ें सही से दिखाई नहीं देती, ऐसे में कार की हेड लाइट्स का इस्तेमाल करना चाहिए। लाटर की वजह आपकी कार दूर से लोगों को दूर से ही दिखाई देगी। यदि आपके कार में डेटाइम रिंग लाइट हो तो आप उसका प्रयोग भी कर सकती हैं।

डिफ़ॉर्ग रुज़ करें

बारिश में पानी से विड़ो धुंधली होती है, साथ ही विजिलिटी भी कम हो जाती है। अगर आप इस मौसम ड्राइविंग करने जा रही हैं तो उससे पहले आपको कुछ बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

इसके अलावा आपको विंडो

को समय-समय पर साफ करते रहना चाहिए ताकि आपको बाहर सही से नजर आए। इसके साथ ही आपको रात में कार चलाते समय हैं जार्ड लाइट्स को ऑन रखना चाहिए।

तेज स्पीड में ड्राइव न करें

बारिश के मौसम का लुप्त उठाने के चक्कर में आपको तेज स्पीड में ड्राइव नहीं करना चाहिए। इसके अलावा आपको कार में एक एक्स्ट्रा टायर जरूर रखना चाहिए। इससे गाड़ी के टायर में यदि कोई दिक्कत होगी तो आप उससे तुरंत बदल पाएंगी।

वाइपर युज़ करें

बारिश में बाइपर की स्पीड को फुल पर रखने से पानी तेजी से

दुनिया के पहले मुस्लिम नोबेल विजेता अब्दुस सलाम

इस्लामाबाद, 2 जुलाई (एक्स्प्रेस डेस्क)। साल 1979 में जब प्रोफेसर अब्दुस सलाम ने जब भौतिकी का नोबेल प्रमिता तो वे पाकिस्तान के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता थे। दुनिया के लिए वे नोबेल पुरस्कार जीने लाले पहले मुस्लिम थे, लेकिन ये विंडोवा ही है कि उनके अपने देश पाकिस्तान में उनसे मुस्लिम होने का दर्जा तक छीन लिया गया था। इसका एकमत्र कारण उनका अहमदिया होना था। एक ऐसा संभावना जो खुद को मसीहा गुलाम अहमद का अनुयायी मानता है। अहमदिया होने के चलते पाकिस्तान में उन्हें जिंदा रहते हुए अपमान का दंश तो झेलना ही पड़ा, मरने के बाद भी उन्हें नहीं छोड़ा गया। पाकिस्तान में मुस्लिम कट्टरपंथियों ने उनकी कत्तव्यों की भी अपवाह कर दिया था। कब लगे, पर लगे, परवर्ष से मुस्लिम शब्द को कुरेद कर हटा दिया गया। अहमदिया समुदाय को पाकिस्तान में भी मुसलिमान माना जाता था लेकिन 1974 में तत्कालीन ज़फ़िकार अली भूटो की सरकार ने उन्हें गैर-मुस्लिम

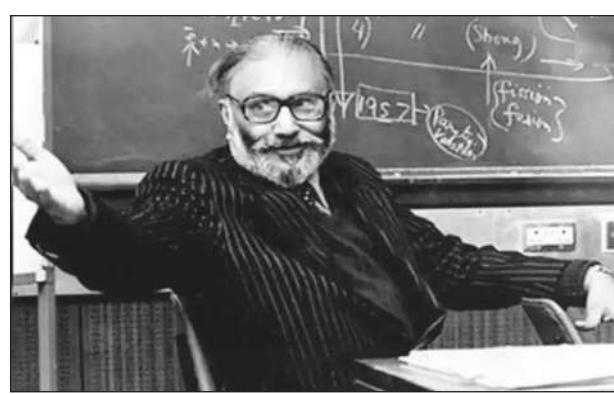
जिसे उसके देश पाकिस्तान ने नहीं माना मुसलिमान, तोड़ दी गई कब्र

घोषित कर दिया था। तब से लेकर आज तक इस सम्बुद्धि को आस्था के कारण हर तरह के उत्तीर्ण का सामना करना पड़ा। लेकिन आज कहानी पाकिस्तान के पहले नोबेल पुरस्कार विजेता की, जो ये दिखाता है कि जिन्हा के देश में किस तरह इस्लाम विज्ञान के ऊपर हावी हो गया है।

सफलता की असाधारण कहानी

पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के झांग में जिले में एक साधारण परिवार में पैदा होने वाले अब्दुस सलाम की सफलता की कहानी असाधारण है। झांग में स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने कॉलेज की डिग्री के लिए लाहौर में रहते हुए प्रतिवर्ती का संचालन करने को अभियान लेकर प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने विद्युतीय भारतीय गणितज्ञ रामानुजन के द्वारा संबोधित की गई समस्या के बारे में लिखा। इस पेपर का शीर्षक था-'रामानुजन की एक समस्या'।

कॉलेजिय पर गए कैमिज



लाहौर में रहते हुए अब्दुस सलाम उच्च शिक्षा के लिए प्रतिवर्ती का स्कॉलरशिप पर कैमिज गए। पाकिस्तान के भौतिक विज्ञानी और लेखक परवेज हुड्डो ने उन्हें एक लाहौर में रहे और फिर पौएंचडी करने चले गए। 1979 में सलाम ने अधिकारक टीचर बनवाया और गैर-मुस्लिम घोषित कर दिया। भूटो के इस फैसले की वजह बताते हुए परवेज हुड्डो भाय का कहना है कि वे बस अपनी जान बचाना चाहते थे। भूटो के ऊपर कट्टरपंथी धार्मिक दल लगातार हमले कर रहे थे।

भूटो ये दिखाना चाहते थे कि वे इन कट्टरपंथियों से ज्यादा इस्लामिक हैं। ये वही भूटो थे, जिन्होंने कहा था कि मैं शराब पीता हूं, लोगों का खून नहीं। इस्लाम में शराब पीना हराम था, क्योंकि पूरी दुनिया में उनका नाम हो रहा था।

सीआईडी ने हैदराबाद से साइबर अपराधी को दबोचा

रांची, 2 जुलाई (एजेंसियां)।

झारखंड के आपराधिक जांच विभाग (सीआईडी) ने हैदराबाद से एक अपराधी को गिरफ्तार किया है। यह व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध में शामिल था।

19 मई को रांची के निवासी ने 1.4 करोड़ रुपये की खोयाधड़ी की शिकायत इसके खिलाफ की थी। इन दिनों साइबर क्राइम बढ़ता है। एक दिन साइबर क्राइम की कोई घटना देखने मिल ही जाती है। अब ऐसा ही एक अन्य मामला सामने आया है। झारखंड सीआईडी ने अंतरराष्ट्रीय साइबर क्राइम में शामिल था। 19 मई को हैदराबाद के स्कूल नगर थाना रांची निवासी ने 1.4 करोड़ रुपये की खोयाधड़ी की शिकायत की थी। इसके बाद से पुलिस अलर्ट मोड पर चल रही थी। सीआईडी ने भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र और

रांची एंडरेंजिट रिसार्च में एक ऐसे नेटवर्क का पता चला जो फैलकर सामान के सुविधाके लिए कई राज्यों में खुचर वैक खानों की स्थापना और संचालन में शामिल था।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर विज्ञापनों के ज़रूरी पैडिंगों तक पहुंच गया। आरोपी को पहचान देने वाले ने उनकी गिरफ्तारी की विवादी को आगे बढ़ावा दिया।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के लिए दो दिनों तक अपने काम को पूछताछ करता रहा।

आरोपी ने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ मिलकर निवेश वेबसाइटों के प्रिंटिंग यूआरएल भेजने के ल

